



आर्योदय ARYODAYE



LET US
LOOK AT
EVERYONE
WITH A
FRIENDLY
EYE

- VEDA

Aryodaye No. 297

ARYA SABHA MAURITIUS

1st Nov. to 9th Nov. 2014

Mantras de Bénédiction avec de l'eau

Bénédiction après le yajna ou autres cérémonies religieuses (Sanskars) par l'aspersion symbolique de l'eau bénite après chacun de trois mantras prononcés par le prêtre officiant ou autre personne.

C'est le purohit / le pundit, c-à-d le prêtre officiant ou un sage / un sanyassi, ou un aîné qui commande le respect de tout le monde doit prononcer les mantras et asperger les yajmans et tous les fidèles.

Les trois mantras de bénédiction

ओ३म् आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता नऽ ऊर्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ॥१॥

Om āpo hishthā mayo bhuvastā na urjé dadhātana.
Mahé ranāya chakshassée. (1)

O Dieu ! L'eau nous est certainement indispensable et très utile. Elle nous donne la santé, la force physique, l'endurance et la vitalité dans notre vie. Elle aide à développer aussi notre capacité intellectuelle.

Nous nous sentons comblés de ta bienveillance sur nous et nous en sommes très reconnaissant envers toi. (Première aspersion symbolique).

ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥२॥

Om yo vah shivatamo rassastasya bhājayatēha nah.
Ushatiriva mātarah. (2)

O Seigneur ! Que nous puissions atteindre la force vitale générée par ce liquide précieux de la terre !

Que l'eau, telle une mère qui ne désire que le bien-être, le bonheur et le salut de son enfant, nous soit aussi bénéfique et réconfortante ! (Deuxième aspersion symbolique).

ओ३म् तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥३॥

Om tasmā arangamām voyasya kshayāya jinvatha.
Apo janayathā cha nah. (3)

O Dieu ! Que cette eau qui est très essentielle pour la survie, la protection et le bien-être de notre corps, de tous nos organes et de tous nos sens nous soit bénéfique et nous garde en bonne santé ! Que nous soyons toujours sous ta protection ! (Troisième aspersion symbolique).

N. Ghoorah

सम्पादकीय

हमारे कर्मयोगी पूर्वज

महातपस्वी, त्यागी और बलिदानी भारतीय आप्रवासी हमारे पूर्वज थे। हम उन कर्मयोगियों के वंशज हैं। वे अपने विशाल देश भारत में अपने माता-पिता तथा समस्त परिवारों को त्याग कर अनुबन्ध प्रणाली के आधार पर यहाँ जीविका कमाने आए थे। उनकी कड़ी मेहनत, महात्याग और सहनशीलता के बल पर मोरिशस में शक्कर का उत्पादन बड़ी तेज़ी से बढ़ने लगा, तथा सरकार की आर्थिक वृद्धि होने लगी।

हमारे तपोमय पूर्वजों के कठोर परिश्रम से यहाँ की बंजर ज़मीन उपजाऊ होती गई, देश हरा-भरा और सुहावना होता गया, परन्तु शक्कर कोठी के मालिकों के घोर अत्याचारों, व्यवहारों तथा शोषणों से उनके सुकुमार शरीर सूखकर कंकाल होते गए। उन्हें थोड़ा सा आराम करने का भाग्य नहीं था। भरपेट अन्न ग्रहण करने का और पूरा शरीर सुरक्षित रखने के लिए वस्त्र नसीब नहीं होता था। शारीरिक सुरक्षा के लिए सुविधाजनक घरों का प्रबंध नहीं था, फिर भी वे महा तपस्वी सब कुछ सहन करते हुए इस देश का उत्थान करते रहे। हम उन पूर्वजों के प्रति नतमस्तक हैं।

संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख-शान्ति तथा आनन्द प्राप्त करना चाहता है। इसी आशा में हमारे पूर्वज यहाँ सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए आए थे। उन्हें क्या पता था कि शक्कर कोठी के मालिकों ने षड्यन्त्र रचकर उन्हें झूठा लालच दिया था। वे सुखी जीवन की आशा से तो यहाँ आए थे, परन्तु मालिकों के दुर्व्यवहारों तथा शोषणों और पाशविक व्यवहारों से उनकी आशा दुख में परिवर्तित हो गई। सारी जिन्दगी तड़पती हुई गुज़र गई। हम उनके ऋण को चुका नहीं पाएँगे।

मोरिशस में उन देव-तुल्य जनों का आगमन होते ही यहाँ के कोठी मालिकों का भाग्य जाग उठा और भारतीय आप्रवासियों का भाग्य फुट गया। वे जीवन पर्यन्त आँसू बहाते रहे। अपने मालिकों के अमानवीय व्यवहारों को सहन करते रहे। इसी प्रकार लगभग सत्तर वर्षों तक अपने शरीर को कंकाल बनाते रहे। सन् १९०७ में मणिलाल डाक्टर के आगमन पर उनके दुखमय जीवन में आशा की किरणों जाग उठीं। उनके महा आंदोलनों से कोठी मालिकों के दुर्व्यवहारों में बदलाव होने लगा। उनकी मदद से हमारे पूर्वजों में अपनी रक्षा करने का साहस बढ़ा, अपने धर्म, संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा की सुरक्षा में जागृति होने लगी। वे अपनी संतानों की शिक्षण व्यवस्था में प्रोत्साहित होते गए। इसी प्रकार धीरे-धीरे उनके पुरुषार्थ से वे उन्नति के पथ पर अग्रसर होते गए। उनकी तपस्या और सहनशीलता हमारे लिए प्रेरणादायक है।

हमारे पूर्वजों ने एक कर्मयोगी मानव का प्रमाण देकर अपना कर्म किया था। अपने धर्म, संस्कृति तथा भाषा का उत्थान करके आर्यत्व-धर्म निभाया था। हमें उन कर्मनिष्ठ प्राणियों से प्रेरित होकर मानवता का धर्म निभाना चाहिए, ताकि सभी नागरिकों की उन्नति और समाज तथा राष्ट्र की प्रगति होती रहे।

आज से ठीक एक सौ अस्सी वर्ष पूर्व भारतीय आप्रवासियों की प्रथम टोली दो नवम्बर १८३४ ई० में अनुबन्ध प्रणाली के आधार हमारे टापू में पहुँची थी। यह तिथि हमारे लिए एक पुण्य तिथि मानी जाती है। उन पुण्यात्माओं के चरण जहाँ पर पहली बार पड़े थे, उस पुण्य स्थान को 'आप्रवासी घाट' नाम दिया गया। आज उस आप्रवासी घाट को "World Heritage" अर्थात् विश्व निरासत की हैसियत से सम्मानित किया जाता है। यह हमारे लिए कितने गर्व की बात है ?

प्रिय पाठको ! इस वर्ष भारतीय आप्रवासियों के आगमन की १८० (एक सौ अस्सी) वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 'कला एवं संस्कृति' मन्त्रालय के तत्वावधान में भारतीय उच्चायोग, आप्रवासी घाट ट्रस्ट फण्ड तथा अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के पूरे सहयोग से उन भारतीय आप्रवासियों की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें भाग लेने के लिए अनेक देशों के भारतीय वंशज पधार रहे हैं। उस समारोह को सफल बनाना हमारा परम कर्तव्य है।

हमारी पूर्णाशा है कि इस देश के समस्त भारतीय वंशजों के सहयोग से तथा सभी नागरिकों के पूरे योगदान से भारतीय आप्रवासी दिवस सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। हमारे कर्मयोगी पूर्वजों के नाम मोरिशस के इतिहास में अमर रहेगा।

बालचन्द तानाकूर

दीपावली के अवसर पर विभूषित आर्य सेवक

डा० उदय नारायण गंगू, आर्य रत्न

आर्य सभा ने इस वर्ष की दीपावली के मंगल अवसर पर तीन ऐसे महानुभावों को 'आर्य भूषण' की अपनी सवोच्च उपाधि से विभूषित किया, जिन्होंने बचपन से ही आर्य समाज के कार्यों में भाग लेना और अपने बहुमूल्य समय को समाज की निस्वार्थ सेवा में व्यतीत करना अपना परम कर्तव्य माना है। इन समाज-सेवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है :

प्रो० सुदर्शन जगेसर, C.S.K, G.O.S.K,
'आर्य भूषण'



प्रो० सुदर्शन जगेसर जी औपचारिक परिचय के मोहताज नहीं हैं। वे इस समय 'मॉरीशस यूनिवर्सिटी परिषद्' (University of Mauritius Council) तथा 'मॉरीशस शोध परिषद्' (Mauritius Research Council) के अध्यक्ष हैं। इससे पूर्व वे CWA तथा MBC के अध्यक्ष रह चुके हैं। मॉरीशस, भारत, कनाडा, अमेरिका, इंग्लैण्ड और स्वेदेन में शिक्षा प्राप्त प्रो० जगेसर जी Chartered Pro-

fessional Engineer तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ हैं। वे अठारह वर्षों तक संयुक्त राष्ट्र (United Nations) में विज्ञान-प्रौद्योगिकी के प्रमुख रहे।

प्रोफ़ेसर जी ने वैदिक धर्म का संस्कार अपने पूर्वजों से प्राप्त किया। वे अपने चाचा, श्री रामकृत जगेसर जी की सामाजिक सेवा से बड़े ही प्रभावित हुए। श्री रामकृत जी एक समय आर्य सभा के महामन्त्री थे। वे Bon Accueil आर्य समाज के सत्संगों में बचपन से ही सुदर्शन जी को अपने घर के सदस्यों के साथ ले जाते थे।

अपने पूज्य चाचा की स्मृति में प्रोफ़ेसर जी ने स्थिर निधि के रूप में आर्य सभा को एक लाख रुपये की राशि इस शर्त पर दी है कि उस रकम के सूद से एम०ए० हिन्दी में प्रथम आने वाले छात्र वा छात्रा को 'श्री रामकृत जगेसर शिल्ड' प्रदान किया जाए।

प्रोफ़ेसर जी की वैज्ञानिक व सामाजिक विषयों पर अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। शिक्षा, अर्थ एवं राजनीति के क्षेत्र में सुधार-कार्य में वे रत हैं और वैश्विक स्तर पर वे शान्ति तथा उचित विकास के पक्षधर हैं।

प्रो० सुदर्शन जी वर्षों तक आर्य सभा के उपप्रधान तथा आर्य युवक संघ के प्रधान रह चुके हैं। उनके कार्य-काल में वर्तमान आर्य भवन का निर्माण हुआ था। वे दीर्घकाल से 'आर्योदय' पत्र पर

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सूर्य प्रकाश तोरल जी की दुखत मृत्यु

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

यूँ तो शुभ काम के लिए एक दिन विस्मरणीय रहता है जिस को स्मरण कर के आनंद का अनुभव होता है। पर कभी कभी किसी अशुभ घटना या काम के लिए भी कोई दिन स्मृति पटल पर अपनी छाप छोड़ कर चला जाता है जिस समय के साबुन से भी धोया नहीं जा सकता। २१ रविवार ऐसा दुःख दे कर गया जिस को लाख कोशिश करने पर भी न भुलाया जा सकता न मिटाया जा सकता।

शाम के छः बजे होंगे। मुझे एक फोन मिला। एक जानी पहचानी आवाज थी - बिना भूमिका बांधे एलान किया कि बालगोबिन आश्रम के मानेजर सूर्यप्रकाश तोरल का निष्प्राण शरीर सें पोल के बस अड्डे पर रास्ते के किनारे पड़ा है। मैं सन्न रह गया। बस इतना कह पाया ज़रा कृपा करके आश्रम वासियों तक खबर पहुँचा दो।

मैंने मोटर निकाली, तब तक जमाई - और बेटी आ गये। तुरन्त घटना स्थल पर पहुँचा पर पुलिस शव को लेकर चीर-फाड़ करने हत लेकर चली गयी थी। मैं मोटर मोड़ कर आश्रम पहुँचा। वहाँ से तुरन्त अस्पताल पहुँचा। रास्ते पर फोन पर श्रीमती जगरनाथ का पता लगा रहा था। मैं चाहता था कि कोई आश्रम की जिम्मेदारी ले। पहले ही मैं ने रखवाला करने वाले को आश्रम का फाटक बन्द रखने की हिदायत दे दी थी।

हमें चिन्ता थी कि लाश को, मौत की वजह जानने के लिए बेरहमी चीड़-फाड़ किया जाए। तब तक सरकार के विदेश मंत्री डॉ० अरविन्द बुलेल और रोज़गार मंत्री सत्यदेव मुच्या आ गए। वे भी इसी कोशिश में लगे थे कि चीड़-फाड़

न किया जाए। अन्त तोगत्व वही हुआ जो सभी चाहते थे।

अगले दिन दोपहर के दो बजे भारी जनसमूह के बीच अरथी उटायी गयी। गणराज्य के प्रेसिडेंट माननीय श्री कैलाश परयाग जी, माननीय श्री अ.बुलेल जी, माननीय श्री एस. मुच्या जी, शिक्षा मंत्री माननीय श्री बसन्त कुमार बनवारी आदि उपस्थित थे दिवंगत आत्मा की अंतिम यात्रा में। बारी बारी से आर्य सभा के प्रधान श्री तानाकूर, उप प्रधान डॉ० उदय नारायण गंगू, सभा के माननीय प्रधान डॉ० रुद्रसेन निऊर, श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, डॉ० जयचन्द लालबिहारी तथा श्रीमती रश्मि, श्री बिसेसर राकाल, श्री राजेन्द्र रामजी, श्री गिरजानन्द तिलक आदि लोगों ने भी अन्तिम दर्शन के लिए और शोकातुर परिवार के प्रति संवेदना प्रकटार्थ आये हुए थे। अरथी उठने से पहले आर्य सभा के उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम ने दुःख प्रकट करते हुए अपना उद्गार प्रकट किया और कहा सूर्यप्रकाश जैसे सेवक पाता बहुत कठिन है। वे एक अथक सेवक थे। तिहत्तर वर्ष की अवस्था में इसलिए हो रहा था क्योंकि वर्षों से वे हिन्दू एड्युकेशन ओथोरिटी के मंत्री थे और बालगोबिन आश्रम के मानेजर जहाँ मैं अध्यक्ष पद पर था।

शव यात्रा लम्बी थी। बहुत लोग साथ चल रहे थे शमशान पहुँचने तक। आचार्य बितूला के नेतृत्व में पूरी वैदिक रीति से अन्त की इष्टि का संचालन १४-१५ पुरोहित-पुरोहिताओं ने वेद मंत्रों से किया / अन्त में आचार्य बितूला और आचार्य उमा ने सारगर्भित व्याख्यान दिये।

बहु कुण्डीय परीक्षा पूर्व यज्ञ

पं० माणिकचन्द बुद्ध, आर्य भूषण

ओं विद्यां चाविद्यां च यस्त द्वे दोभयं सह।
अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते ॥

यजु० ४०/१४

पाम्पलेमूस आर्य ज़िला परिषद् के सौजन्य से पिछले कुछ वर्षों से हमने छात्र-छात्राओं के हितार्थ परीक्षापूर्व यज्ञ का सिलसिला आरम्भ किया। शाखा-सभाओं तथा घर-घर में भी यह यज्ञ पर्याप्त लोकप्रिय सिद्ध हुआ। कुछ शाखा-सभाओं में परीक्षा-पूर्व बहुकुण्डीय यज्ञों के आयोजन की परम्परा चल पड़ी है।

पिछले शनिवार २७.०९.१४ को दोपहर ३.३० बजे उपरोक्त परीक्षा पूर्व बहुकुण्डीय यज्ञ का अनुष्ठान मोर्सलमाँ आर्य समाज मंदिर शाखा नं० ७/१३६ में हुआ। ९ कुण्डों में यज्ञ का प्रबन्ध किया गया। इसमें लगभग ३० से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इनकी आयु ५ से १८ वर्ष की थी। ये प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ थे। सब सांस्कृतिक वेश भूषा में थे और यथासामर्थ्य यज्ञ-सामान लेकर उपस्थित हुए। उनके अभिभावक और कुछ अध्यापक तथा अध्यापिकाएँ भी उपस्थित थे।

यज्ञ पुरोहित थे पं० मधु जिराखन, पं० विद्यानी मुखराम तथा ज़िले के मुख्य पुरोहित पं० माणिकचन्द बुद्ध। सहयोगी पुरोहिता पंडिता ० पार्वती लक्ष्मण थीं। यह कार्य आर्य ज़िला पाम्पलेमूस के अध्यक्ष श्री गृजानन्द तिलक जी की विशेष उपस्थिति में हुआ। उनका विशेष सन्देश भी हुआ। दोनों शाखाओं द्वारा वाद्य के साथ भजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के अन्त में सब का चाय और खीर-पूरी से सत्कार भी हुआ।

यह परीक्षा-पूर्व यज्ञ निम्न पद्धति के आधार पर हुआ।

पद्धति - तीन बार ओ३म् का जाप तथा तीन बार गायत्री मंत्र का उच्चारण (१)
- आचमन + अंगस्पर्श + व्रतधारण
- ईश्वस्तुतिप्रार्थनोपासन अ अग्निहोत्र (१६ आहुतियाँ)
- आधारावाज्यभागाहुति (४)
- सरस्वती तथा मेधा सूक्त के विशेष मन्त्रों से विशेषाहुतियाँ
- आधारावाज्य अ व्याहुत्याहुति (४) + स्विष्टकृत्याहुति (१) + मौन प्राजापत्याहुति (१) + विश्वानि देव - मन्त्र से (३) + ११ बार गायत्री मन्त्र से विशेषाहुति (छात्र-छात्राओं की पाँच कर्मेन्द्रियों + पाँच ज्ञानेन्द्रियों तथा आत्मा के परीक्षानिमित्त होने के लिए विशेष प्रार्थना।)
- अन्त में पूर्णाहुति तथा महावामदेव्य गान।
समय - ४० मिनट

हमने देखा कि सभी छात्र-छात्राएँ अत्यन्त प्रसन्न थे क्योंकि यज्ञ बहुत लम्बा और बोझिल न रहा। कार्यक्रम के अन्त में मोर्सलमाँ समाज के कार्यकर्ताओं द्वारा सभी छात्र-छात्राओं को परीक्षा संबंधी सामान भेंट स्वरूप दिये गये। सब बहुत प्रसन्न और प्रोत्साहित दिख रहे थे।

अभिभावकों ने लौटते समय मोर्सलमाँ आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की और उन्हें धन्यवाद-समर्पण किया।

दीपावली के अवसर पर विभूषित आर्य सेवक

डा० उदय नारायण गंगू, आर्य रत्न

पृष्ठ १ का शेष भाग

लिख रहे हैं। प्रधान की हैसियत से उन्होंने आर्य युवक संघ के तत्वावधान में Vedic Journal नामक पत्र का प्रकाशन किया था, जिसके द्वारा मॉरीशस के युवकों को सामाजिक सेवा एवं वैदिक ज्ञान अर्जन करने की प्रेरणा दी जा रही थी। उनके विदेश चले जाने से पत्र का प्रकाशन रुक गया। आज भी वे दिल से चाहते हैं कि युवकगण शिक्षित होकर समाज-सेवा में अग्रसर हों। उन्होंने आर्य सभा को दो लाख रुपये की एक और स्थिर निधि इस शर्त पर दी है, ताकि उक्त राशि के सूद का प्रयोग प्रति वर्ष आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करने के लिए प्रयोग किया जाए। साथ ही हर दो सालों पर एक 'यूथ लीडर' को चुनकर उन्हें 'आर्यन यूथ लीडर' नाम से एक शिल्ड दिया जाए।

पिछले पचास वर्षों से प्रोफ़ेसर जी समाज की सेवा में तन-मन-धन से लगे रहे हैं। इन दिनों परिवार को सुखी बनाने के कार्य में लगे हुए हैं। दीपावली के शुभावसर पर आर्य सभा उनकी स्तुत्य सेवाओं के लिए उन्हें 'आर्य भूषण' की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित करते हुए गर्व का अनुभव करती है।

पंडित धर्मेन्द्र रिकार्ड जी, 'आर्य भूषण'



पंडित धर्मेन्द्र रिकार्ड जी व्यक्तिगत धर्म, पारिवारिक धर्म, सामाजिक धर्म और राष्ट्रीय धर्म के पालन में पूर्ण सफल हुए हैं।

आपका जन्म १२ जून १९५० को आमोरी गाँव में हुआ। आप अपने माता-पिता की ज्येष्ठ संतान हैं। आपने एस.सी., जी.सी.ई. ओ.एल. और ए.एल. की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। आप १९७१ में सरकारी हिन्दी अध्यापक बने। आपने (A.C.E.) Advanced Certificate in Education, Teachers Diploma और Diploma in Education Management की परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त की। संस्कृत भाषा के प्रति आप में बहुत रुचि है। हिन्दू महा सभा में आप ने भारतीय विद्वानों से संस्कृत पढ़ी। आपने व्यक्तिगत धर्म का पालन करते हुए अपना उचित निर्माण किया है।

आपका विवाह कुमारी विजय लक्ष्मी दानाहु से १९७९ में हुआ। आपकी दो संतानें हैं - एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्र शचिन्द्र रिकार्ड ने एम.सी.सी. किया है। वे National Computer Board में Consultant हैं। उनपर पूरे देश की कम्प्यूटर सुरक्षा का उत्तरदायित्व है। आपकी पुत्री, अर्चना रिकार्ड का विवाह

हो चुका है। उन्होंने M.S.C. और P.G.C.E. तक पढ़ाई की। इस समय वे Bon Accueil के स्टेट कॉलिज में माध्यमिक बच्चों को पढ़ाती हैं। आपकी धर्म पत्नी सरकारी प्राथमिक स्कूल में Deputy Head Teacher हैं। वे आर्य सभा की पुरोहिता भी हैं। इस तरह आपने अपने पारिवारिक धर्म का पालन करते हुए परिवार के प्रत्येक सदस्य को उन्नति का मार्ग दर्शाया है।

सामाजिक धर्म के पालन में पंडित रिकार्ड जी सदैव रुचि लेते रहे हैं। आप २० वर्ष की उम्र से अब तक आमोरी आर्य समाज के सक्रिय सदस्य रहे हैं। वैदिक धर्म, संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में आपका योगदान सराहनीय है। १९८२ से १९८४ तक आप आर्य सभा मोरिशस के उपमंत्री थे। वर्षों तक 'विद्या समिति' के मंत्री रहे। आपने आर्य समाज की पाठशालाओं के निरीक्षक तथा Youth Officer के रूप में सेवा की। आपने लगातार २३ वर्षों तक आर्य भवन में छात्र पुरोहितों को प्रशिक्षण दिया तथा १५ वर्षों तक 'हिन्दू महा सभा' में छात्रों को संस्कृत पढ़ाई।

पंडित जी हिन्दी अध्यापक संघ (Hindi Teachers Union) के मंत्री पद पर १९९१ से २०१२ तक रहे। आपके लेख संघ के पत्र - 'आक्रोश' पर और आर्य सभा के पत्र - 'आर्योदय' पर प्रकाशित होते रहते हैं। आप तीन बार आर्य सभा द्वारा आर्य पुरोहित मण्डल के प्रधान पद पर नियुक्त हुए। पिछले २० वर्षों से रिव्येर जी राँपार ज़िले के वरिष्ठ पुरोहित हैं।

राष्ट्रीय धर्म के पालन में भी पंडित जी पीछे नहीं रहे हैं। १९८३ में आप आर्य सभा के पुरोहित नियुक्त हुए तथा अखिल मॉरीशस में वैदिक संस्कार सम्पन्न करने लगे। पिछले २५ वर्षों से रेडियो कार्यक्रम - 'वैदिक वाणी' में एवं टी०वी० की 'अमृत वाणी' में आपके वैदिक सन्देश प्रसारित हो रहे हैं। इन सन्देशों के माध्यम से आप भाईचारे का विस्तार करते हुए मॉरीशस राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं।

समस्त सेवाओं के कारण आर्य सभा ने दीपावली के मंगलमय अवसर पर पंडित धर्मेन्द्र जी को 'आर्य भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया है।

श्री हितलाल मोधू, 'आर्य भूषण'



आपका जन्म २५ जनवरी १९३७ में त्रिओले गाँव में हुआ। आपके पिता का नाम श्री भरत मोधू और माता का नाम श्रीमती सुगिया दुखित है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

दर्शन योग महाविद्यालय में संन्यास व वानप्रस्थ दीक्षांत समारोह के विवरण

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ के ऐतिहासिक पृष्ठों में ३० सितम्बर २०१४ एक नई दिनांक का पृष्ठ जुड़ा जिसमें कि दो वानप्रस्थ-दीक्षा व एक संन्यास - दीक्षा सम्पन्न हुई। इस समारोह में अनेक संन्यासियों, विद्वज्जनों व साधकों ने सहभागिता दी। इनमें से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक ने अपनी प्रेरणाओं व आशीर्वाचनों से इस समारोह की शोभा ही उत्तम कर दी। दीक्षित महानुभावों ने भी अपनी-अपनी भावनायें



व्यक्त की। इस समारोह का योग्य संचालन ब्र, दिनेश कुमार जी ने किया व संस्कार का आयोजन पण्डित बलभद्र शास्त्री जी ने किया।



प्रथम स्वामी आशुतोष जी ने संन्यासी की आन्तरिक स्थिति के बारे में बताया कि संन्यासी किस प्रकार क्लेशों से रहित, 'इदन्न मम' की भावना को साकार करता हुआ और ईश्वर प्राप्ति को ही जीवन का मनुष्य लक्ष्य व अग्रिम लक्ष्य मानता हुआ विचरण करता है। वानप्रस्थ के लिये संदेश में आपने बताया कि नित्यप्रति नवीन उत्साह के साथ अपने

आश्रम के कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए संन्यास आश्रम की ओर बढ़ना है।

.....। समारोह में प्रथम वानप्रस्थ दीक्षित श्री निगन मुनि जी (पूर्व नाम श्री रणवीरसिंह जी बल्हारा, सेवानिवृत्त सिविल इंजीनियर, हरियाणा) ने अपने वानप्रस्थ के कर्तव्यों को पूर्ण रूपेण निर्वहन करने का उत्साह दिखाया। आप दर्शन योग महाविद्यालय की रोहतक में निर्माणाधीन नई शाखा हेतु अग्रणी बनकर कर्मठता से कार्य कर रहे हैं। द्वितीय वानप्रस्थ दीक्षित श्रीमती सुगमा मुनि जी (पूर्व नाम श्रीमती



अंगूरी देवी जी, पूर्व शिक्षिका) ने भी अपने इस वानप्रस्थ के संस्कार के पश्चात् नवीन भावनाओं से युक्त स्वयं को अनुभव किया। तृतीय संन्यास दीक्षित स्वामी ज्योतिरानन्द सरस्वती जी (पूर्व ब्रह्मचारिणी ज्योति जी) ने अपने जीवन की कुछ प्रेरक घटनाओं को बताते हुए कहा कि कैसे जीवन में लम्बे संघर्ष के पश्चात् आपने स्वयं को संन्यास के योग्य समझा। उन्होंने अध्यात्म से संबंधित अपनी उपलब्धियों को भी बताया। अपने प्रेरक व मार्गदर्शक स्वामी विवेकानन्द जी व स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी के प्रति आपने अपने श्रद्धा के भावों को प्रस्तुत किया। आपने ४८ वर्ष के अपने इस वय में ८ दर्शनों व उपनिषदों का अध्ययन, ऋग्वेद व यजुर्वेद का स्वाध्याय, दर्शनों का अध्यापन कार्य तथा एक लम्बा गम्भीर सूक्ष्म योगाभ्यास किया है। आधुनिक शिक्षा की दृष्टि से भी आप संगीत में स्नातिका हैं।

BRAMDEO MOKOONLALL
c/o Darshan Yog MahaVidyalaya, Aaryavan,
Rojad, P.O. Sagpur, Dist. Sabarkantha
Gujarat - 383307, INDIA - 00 91 9909410664

उद्घाटन समारोह

वेद सुधा गंगू

रविवार ता० २८ सितम्बर २०१४ को ३.०० बजे माहेवर्ग आर्य मंदिर में 'ग्रां पोर आर्य युवक संघ' का उद्घाटन-समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें अच्छी संख्या में लोगों की उपस्थिति हुई थी। आर्य सभा व विभिन्न शाखा समारोह के अधिकारी सदस्य गण एवं युवक-युवतियों ने अपनी उपस्थिति से कार्य की शोभा बढ़ाई।

कार्यारम्भ वेदमंत्रों के सहोच्चारण से हुआ। इसमें भाग लिया था ग्रां पोर की उन युवतियों ने, जिनको तैयार किया था पंडिता प्रीतिमा गोरीबा तथा पंडिता हरदयाल ने। मन्त्रोच्चारण से मंदिर में भक्ति का वातावरण छा गया। उस अवसर पर माहेवर्ग, ग्रां पोर, बुआ दे जामुरेट, त्रुआ बुचिक, रिव्येर जू पोस्त आदि समारोह के युवक-युवतियों ने भिन्न-भिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिनमें भाषण-संदेश, कविता पाठ, गाने, रूपक, फ़िल्म-प्रदर्शन आदि शामिल थे। उन कार्यक्रमों से जनता अति प्रभावित हुई और सभी ने उन युवक-युवतियों को खूब सराहा।

मन्त्रोच्चारण के तुरंत बाद रिव्येर जू पोस्त की कुमारी अश्विना हेमराज ने सभी को स्वागत करते हुए उपस्थिति के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने आर्य सभा के कर्मठ सेवक स्वर्गीय श्री सूर्यप्रकाश तोरल जी को श्रद्धांजलि अर्पित की और सभी से एक मिनट मौन धारण की मांग की। दीप-प्रज्वलन के लिए उन्होंने श्रीमती रत्नमाला मंगू जी से मांग की।

तत्पश्चात् माहेवर्ग आर्य समाज की युवतियों ने शेष कार्य को आगे बढ़ाया।

सर्वप्रथम ग्रां पोर आर्य जिला परिषद के प्रधान श्री धरमवीर गंगू जी का संदेश हुआ। उन्होंने अपने अत्यन्त प्रभावशाली भाषण में युवक-युवतियों के लाभार्थ कई बातों का जिक्र किया। उनके संदेश के बाद माहेवर्ग युवक-युवती संघ की भारत नाट्यम में माहिर दो युवतियों ने एक नृत्य प्रस्तुत करके छोटे-बड़े सभी को प्रफुल्लित कर दिया। श्री प्रकाश बालकराम तथा माहेवर्ग आर्य युवक संघ के अति कर्मठ युवक श्री रवि लीलाचन्द ने अपने भाषणों में एक आदर्श जीवन पर प्रकाश डालते हुए युवक-युवतियों को आदर्श जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। उनके अलावा उस दिन के मुख्य वक्ता माहेवर्ग आर्य युवक संघ के सलाहकार श्री वीरम गंगू जी का भी हिंदी और अंग्रेजी में एक सारगर्भित भाषण हुआ। सभा-मंत्री श्री हरिदेव रामधनी जी का वर्तमान सामाजिक व धार्मिक दयनीय परिस्थिति पर भाषण हुआ। उन्होंने युवकों को बताया कि वैदिक जीवन पद्धति में जीवन को सफल बनाने के सभी साधन सुलभ हैं।

कार्यक्रम के दौरान कविता-पाठ एवं गीत भी प्रस्तुत किये जा रहे थे। कुमारी अश्विना हेमराज तथा माहेवर्ग आर्य युवक संघ के सदस्यों के गीतों को सुनकर लोगों के मन खुश हो गये। कार्यक्रम के अन्त में त्रुआ बुचिक आर्य युवक संघ के सदस्य श्री ओकाश एतवा ने कार्य की सफलता के लिए सभी को धन्यवाद दिया, जिसके पश्चात् सभी ने मिलकर सन्ध्या की।

अन्त में सभी लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

पृष्ठ २ का शेष भाग

आपने छठी की कक्षा, माध्यमिक फार्म IV, हिन्दी साहित्य में प्रथमा और M.I.E का A.C.E की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की।

आपका विवाह कुमारी चन्द्रावती डोमा से २३ अक्तूबर १९६० में हुआ। आपने २० वर्ष की आयु से यज्ञ करना आरम्भ किया। १९५९ में आर्य सभा मोरिशस के आजीवन सदस्य बने। आपके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। सभी शिक्षित हैं। एक लड़के को छोड़ सभी विवाहित हैं।

सन् १९६० से १९६४ तक श्री हितलाल मोधू जी आर्य सभा मोरिशस के श्रद्धानन्द प्रिंटिंग प्रेस और साप्ताहिक पत्र, 'आर्योदय' का कार्यभार सम्भालते थे। सम्पादक थे - स्वर्गीय मोहनलाल मोहित जी। मोधू जी आर्योदय का सम्पादन, लेखों का चयन और प्रूफ संशोधन आदि कार्य करते थे। ७ फरवरी १९६४ से १५ मई १९६४ तक 'आर्योदय' के स्थानापन्न सम्पादक बने। आर्य सभा में आप के कार्य इस प्रकार थे -

- (१) वृहदाधिवेशन के विवरण की तैयारी और वृहदाधिवेशन के दौरान विवरण पढ़ना।
- (२) आर्य सभा के पंडितों का मासिक बिल प्राप्त करना।
- (३) प्रेस कमेटी के मन्त्री के साथ-साथ स्व० श्री हरिलाल चूड़ोमणि जी के समय में 'विद्या समिति' का आवेदन पत्र से लेकर परीक्षा-फल आने तक का सारा कार्य सम्भालना आदि।

अगस्त १९६४ में आप सरकारी प्राथमिक पाठशाला में हिन्दी अध्यापक बने। आपने दिसम्बर

१९९३ से १९९६ तक (अवकाश-प्राप्ति तक) प्लेन दे पापाय की पाठशाला में उपमुख्याध्यापक का कार्य सम्भाला।

श्री हितलाल जी दीर्घकाल से समाज-सेवा करते आये हैं। उन्होंने महेश्वरनाथ सायंकालिक पाठशाला में पढ़कर उसी पाठशाला में निःशुल्क हिन्दी अध्यापक के रूप में कार्य किया। १९५८ में त्रिओले दारनी आर्य समाज की सायंकालिक पाठशाला में हिन्दी अध्यापक के रूप में कार्य किया। उन दिनों स्व० पं० देवशरण शाहजादा जी आर्य सभा की ओर से निरीक्षण करने आते थे। १९५८ में त्रिओले दारनी आर्य समाज में प्रवेश हुए। १९५९ से १९६० तक दारनी आर्य समाज का मन्त्री रहे। १९६१ में आप त्रिओले तीन बुतिक आर्य समाज में प्रवेश हुए। उन दिनों तीन बुतिक आर्य समाज में केवल आप ही हवन करने जानते थे। समाज में बहुत कम लोग थे। रात्रि में बैठक लगती थी। तीन बुतिक आर्य समाज और 'श्रावणी समिति' में अब तक अनेकों बार मन्त्री और कोषाध्यक्ष का कार्य-भार सम्भाला है। ५३ सालों से नियमित रूप से आप इसी त्रिओले तीन बुतिक आर्य समाज के उत्थान में कार्य-रत हैं। इस समय आप ही इस समाज के सब से पुराने सदस्य हैं। कई सालों से इस समाज में आप प्रधान का पद सम्भाल रहे हैं। गत वर्ष २०१३ में आपने साल भर इस समाज की शताब्दी मनाई और स्मारिका भी निकाली।

'आर्य भूषण' से विभूषित प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेश्वर जी, पंडित धर्मेन्द्र रिकार्ड जी और श्री हितलाल मोधू जी को हमारी शत-शत बधाइयाँ।

क्रमशः

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम

स्मृति यज्ञ

रविवार दिनांक २१ सितम्बर को अचानक दिल की धड़कण बन्द होने पर बालगोबिन आश्रम के मानेजर सूर्यप्रकाश तोरल का देहावसान बस अड्डे पहुँचते पहुँचते हो गया।

अगले दिन २२ सोमवार २०१४ को अपार जन समूह के बीच अर्थी उठायी गयी और गाँव की ही श्मशान भूमि में अन्तयेष्टि क्रिया सम्पन्न की गई।

पिछले रविवार १२ अक्तूबर को दोपहर २.०० से ४.०० बजे के बीच श्रीमती गोविन्दरामेण भवन में उनकी याद में एक विशेष यज्ञ सम्पन्न किया गया जिसमें परिवार के सदस्यों के साथ आर्य सभा मोरिशस के अनेक वरिष्ठ सदस्यों ने भाग लिया और बारी बारी से सूरज प्रकाश के जीवन और सामाजिक कार्यों पर विशद रूप से प्रकाश डाला।

सूर्य प्रकाश के कज़ीन भाई दक्षिण के प्रसिद्ध गायक ने दो सुन्दर भजन पेश किये जो मौके के लिये उपयुक्त थे। दोनों भजनों में से एक का बोल था जो लोगों को बहुत भाया। 'ये ज़िन्दगी के मेले दुनिया में कम न होंगे अफ़सोस हम न होंगे।' यह कितनी सही बात है हम आते हैं चन्द दिनों के मेहमान के रूप में, और महफ़िल छोड़ कर दबे पाँव चले जाते हैं।

सभी ने एक स्वर में कहा कि सूर्यप्रकाश एक अच्छे समाज सेवक थे। वह परहित का पीयूष पीते पीते चला गया। फिर आने के लिए।

स्कूल का उत्सव व गांधी जयन्ती

गत रविवार ता० ५ अक्तूबर २०१४ को प्रातःकाल ८.३० से ११.३० बजे तक अप्पर दागोच्चेर में हिन्दी पाठशाला का ३३ वाँ सालाना उत्सव मनाया गया। साथ ही चूँकि २ अक्तूबर बीते ३ ही दिन गुज़रे थे महात्मा गांधी जयन्ती मनायी गयी। उस अवसर पर आर्य सभा मोरिशस के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू और दूसरे उप-प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम उपस्थित थे। भावी आम चुनाव का माहौल बना हुआ था इसलिए मंत्री माननीय सुरेन दयाल, सम्भाविक उम्मीदवार श्री अशोक जगनाथ आदि उत्सव में उपस्थित थे। सभी वक्ताओं ने हिन्दी की पढ़ाई की आवश्यकता और महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। स्कूली बच्चों द्वारा रोचक व शिक्षा पद आईटेम्स पेश किये गए कार्य का आरम्भ यज्ञ द्वारा किया गया था।

ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

1, Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,

Email : aryamu@intnet.mu,

www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,

पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न

सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,

बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न

सम्पादक मण्डल :

(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, पी.एच.डी

(२) श्री बालचन्द तानाकूर, पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न

(३) श्री नरेन्द्र घूरा, पी.एम.एस.एम

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.

Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,

Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

D.A.V College (Port Louis) - In Action

D.A.V Prevoc Students attend Exhibition at MITD

As was informed in the previous News Update of the college, the series of art and craft projects which the students of prevocational stream have been working on since May 2014,



MITD, Cassis



branch. The Exhibition took place on 11th September where the different objects of decoration were displayed for viewing by several other participants from other colleges. The Manager of MITD, Mrs. Beatrice Duval, highly praised the work of our students thereby commenting that these were one of the most remarkable collections she has seen during the exhibition activity. The teachers of Prevoc stream deserve special thanks and appreciation as they have worked hard with the students to make this project a success at national level. Most special thanks go to Mr. P. Buhorah, Mr. M. Mogun Mrs. V. Rajroop, Mrs. A. Nowbuth, Miss M. Ramdany and Miss. S. Kesso, teachers of Prevoc stream, for their devoted assistance in this project.

D.A.V College visit to Gayasingh Ashram

The students of SC organised a visit



to the Gayasingh Ashram with the help of Mrs. Deepchand Haymawantee and Miss Anishta Khuguth - Educators of the college to offer meals to the residents



of the Ashram. The activity was organised on 18th September. The students served a Lunch which the students had paid for after collecting money among themselves. After serving the meals, the students visited every ward of the Ashram where they fed the bed-ridden residents. The students spent a lot of time with the residents. They also animated a short singing and dancing activity in which the Residents happily took part. The Rector, Mr. Moher and the Deputy Rector, Mrs. Domah equally participated in this noble activity. They were very kind in providing full support in making this activity a success.

Fundraising Activity - A remarkable success

The College informed all stakeholders in its previous news update that a fundraising activity was organised by the Parents-Teachers Association (PTA) with a view to raising funds to be used for future projects. This fundraising was split into two main activities - a Tombola and a Food Day. In the Tombola, a student of the college won the 'Corbeille Ménagère' and many other students who sold maximum tickets were rewarded with gifts for their commitment. The second part of the fundraising, that is, the food day, was carried out on 12th September. This activity was remarkably animated by all



teachers and students. A large variety of foods and drinks were prepared and sold among the Managing staff, teaching and non-teaching staff and students. Both fundraising activities have been a remarkable success in terms of the funds collected.



teachers of the college also made a separate contribution. A lucky draw was also carried for teachers only and Mr. Ramdaursingh was the winner of a cash prize. However, Mr. Ramdaursingh benevolently gifted of the cash prize to the PTA. Such a rare and selfless act deserves upmost appreciation. The Management and PTA members expressed their most sincere gratitude to him.

Special Yaj for SC and HSC Students before the Cambridge Exams

The management of D.A.V College organised a special "Saraswati Yaj" for the SC and HSC students taking part in the Cambridge Examinations this year. This Yaj was performed by Pt. Shri Yaswantall Chooroomony on 19th September with the aim of receiving the divine



blessings for Examinations to be held from 24th September to 23rd November. The College will also be having its internal Exams from 7th to 31st October.

The Rector and Deputy Rector of the college took the opportunity to give last minute advice to the students. They also received their time table on that day.

All students and Teaching Staffs will soon be on summer holidays for a period of two months - November and December. The resumption of studies for the new academic year will be around 12th January 2015.

OM ARYA SABHA MAURITIUS BAHUKUNDIYA YAJNA CUM CULTURAL PROGRAMME

on the occasion of Ganga Asnan Festival
on Thurs. 06 November 2014 as from
9.00 a.m. to noon at the following places :-

- Pte. aux Piments
- Blue Bay
- Le Bouchon
- Belle Mare (near waterpark)
- La Cambuse
- Bois des Amourettes (near jetty)
- Petit Sable
- Old Grand Port
- Telfair Garden, Souillac
- Flic-en-Flac
- Anse la Raie
- Pte. aux Roches, Riviere des Galets (near parking)

OBITUARY



It is indeed with great sorrow that everybody learnt the sudden demise of Shri Surya Prakash Torul-PDSM, Arya Bushan on Sunday the 21st of September, 2014. He was the second son of late Motee Torul-

MBE staunch Arya Samajist and renowned social worker and Smt Rajwan-tee Torul born Pultoo. He was the elder brother of Prof. Ved Prakash Torul. After attending several functions he went to Balgobeen Ashram as Manager to pay visit to his inmates. He left the Ashram at around 17.30 hrs to catch up the bus but unfortunately he fainted at the bustop.

S P Torul better known as Jairaj for the dear and near ones had a pleasant and joyful personality. In addition he was a very good communicator and was gifted with a sense of humour. He was someone who easily merged himself in any social group, be it a child, teenager or adult. He had indeed inherited all the good qualities of his father and his elder brother Jagut Prakash. He was loved by everybody.

Born on the 22nd day of August 1941 at Gros Billot, New Grove in a modest but well reputed family with a remarkable social and 'arya samaji' background. His grooming at the tender age was done in a very sound and healthy environment. He did his primary studies at Mare d'Albert Government School and his secondary education at Durham College, Rose Belle. Later on he obtained a Diploma in Co-operative Administration from the University of Mauritius. He followed courses in Trade Union and attended several International workshops. Married to Mrs Prema Anuradha Ramtohl, the couple has two lovely children - a daughter namely Veeneeta Devi Torul is married to Prakash Baluckram the Secretary of Grand Port Zila Parishad and a son Janesh Torul.

He joined the public sector as Fisheries Officer and due to his perseverance and hardwork he climbed the ladder and became Chief Fisheries Protection Officer. Mr S P Torul was so devoted to whatever assignment was given to him that he always had a professional touch in whatever he did. He had mastered his English language and was very dextrous in drafting reports, writing letters and articles. Being a longstanding Trade Unionist he remained as Secretary General of the Government Staff Association (GSA) for a long period and was very good in doing mediation to settle disputes. It was due to his experience, professionalism and communicating skill that after his retirement the then Minister Hon Clarel Malherbes requested him to work as adviser for over two years. He was indeed someone much respected in the Civil Service. As a recognition to his loyal and dedicated services he was conferred the high distinction of 'PDSM' by the government.

S P Torul was a dedicated and remarkable social worker. He was a member of Gros Billot Arya Samaj and occupied the post of Honorary Chairman since years. He was also a life member of Arya Sabha Mauritius and served the Sabha in different capacities. Since more than ten years he was the Manager of J Balgobeen Ashram, Secretary of the Hindu Education Authority, Secretary of the Examination Board of Arya Sabha. For years he served

as Secretary of Grand Port Arya Zila Parishad and was the Vice President of the Parishad. He helped the Sabha in making evaluation and recommendations in respect of salary of the staff. Annually he helped the Grand Port Zila Parishad to organise blood donation. Lastly he was nominated as the Chairman of the Aryan Senior Citizen Association which is in the pipeline. Due to his immense contribution and support the Arya Sabha conferred upon him the title of Arya Bhushan.

Further he was thrice elected as the President of the Grand Port Senior Citizen and consequently nominated as a Council member at National level. He was the co-ordinator between the Mauritian Senior Citizen Council and the Respect Age Senior Citizen Association of Delhi. He was an active member of the 'Elderly Watch' and the 'Society for Alzheimer' set up by the Ministry of Social Security. Social service was part of his life.

With the demise of S P Torul, not only the Torul family, but the Arya Sabha and the whole community lost a great social worker, a good friend and a selfless humanitarian. He will be remembered for his good qualities for long.

Someone has rightly said: "The greatness of a man can be measured by the void he leaves behind him".

**Harrydev Ramdhony, Arya Ratna
Secretary, Arya Sabha Mauritius**

OM ARYA SABHA MAURITIUS NEW BOOKS AVAILABLE at Dhruvanand Pustakalaye

S/N NAMES OF BOOKS

1. Antheshti Sanskar (Hindi)
2. Aryabhavinay
3. Sanskar Chandrika (Hindi)
4. Bal Satyartha Prakash (Hindi)
5. Bhagwad Geeta (Hindi)
6. Mahabharatam (Hindi)
7. Bhakti Darpan (Hindi)
8. An Introduction to the commentary of the Vedas
9. Shad Darshan (Hindi)
10. Sanskar Samouchaye (Hindi)
11. Saral Satyartha Prakash (Hindi)
12. Vedic Vivah Paddhati (Hindi)
13. Vadika Marriage Ceremonical (Eng)
14. Valmiki Ramayan (Hindi)
15. Makers of Arya Samaj (Eng)
16. Vedic Philosophy (Eng)
17. Sanskar Vidhi (Hindi)
18. Human Right and the Vedas (Eng)
19. Vaidik Satyartha narain katha (Hindi)
20. Upanishad Rahasya (Hindi)
21. Ishopnishad (Hindi)
22. The Holy Vedas (Eng)
23. Sanskrit-Hindi Kosh
24. Sankhya Darshan Bhasya
25. Bodh Kathayein (Eng) Swami Anand
26. Anand Gayatri Katha (Eng) Swami Anand
27. How to Live Life
28. The Only Way(Ek hi Rasta)(Eng)Swami Anand
29. Vedic Vichardhara ka Vaigyanik Aadhar
30. Hindu Sanskar (Eng)
31. Manusmriti (Eng)
32. Gayatree Rahasya (Hindi)
33. Sandhya : kya? kyun? kaisse (Hindi)
34. Chaturved Shatkam (Hindi)
35. Charak Samhita (Hindi) Part - 1
36. Charak Samhita (Hindi) Part - 2
37. Vedon ki adhyatamdharma - Dr (Hindi)
38. Pearl of the Vedas (Eng)
39. Vidurniti (Hindi)
40. The message of Upnishad (Eng)
41. The Dayanand Charitra (Eng)
42. Swami Dayanand Saraswati his life and ideas (Eng)
43. Anthology of Vedic hymns (Eng)
44. Glimpses of Dayanand (Eng) - Pt. Chamupati M.A
45. Vedas the right approach (Eng) Swami Dhamanand
46. Rig Ved Bhasya Bhumika (Hindi)
47. The Essence of Satyartha Prakash
48. Swami Dayanand Saraswati in the eyes of Distinguished
49. Panchmahayagya Vidhi
50. Shrimad Dayanand Prakash

..... to be continued